प्राक्कथन

भारतीय साहित्य में प्राचीन साहित्य से लेकर हिंदी साहित्य तक दलित वर्ग का चित्रण बड़े पैमाने पर देखने को मिलता है। इस सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में छुआछूत की पीड़ा, दलित महिलाओं की समस्या और उनके शोषण जैसे अन्यायों के प्रति आक्रोश और विद्रोह की अभिव्यक्ति हुई है। हजारों वर्षों से धर्म, शास्त्र, परंपरा और रीति-रिवाजों के नाम पर उनका खूब शोषण किया गया है। अनेक प्रकार की अक्षमताओं के कारण न केवल उनकी पहचान नगण्य रही है, बल्कि उन्हें हमेशा गरीबी की खाई में धकेला गया है, जो सैकड़ों पीढ़ियों से जानवरों से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर हैं, धार्मिक और पारंपरिक लोगों द्वारा दलितों का हर संदर्भ में शोषण किया जाता रहा है।

वर्ष १९९० के दलित साहित्य पर नजर डालें तो ये वे बदलाव थे जब सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में प्रगति हुई। दलित साहित्य १९९० से पहले भी लिखा गया था लेकिन दलित महिलाओं की समस्याओं को उस तरह से नहीं उठाया गया जिस तरह से १९९० के बाद उनकी समस्याओं को उठाया गया। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दलित महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय है। दलित महिलाएं दोहरे अभिशाप से ग्रस्त हैं। एक तो महिला होने का और दूसरा दलित महिला होने का। दलित महिलाओं का लेखन और दलित महिलाओं को केंद्र में रखकर किया गया लेखन मुख्य रूप से आधुनिक युग की देन है। दलित स्त्री चेतना समाज और साहित्य में दलित महिलाओं के बढ़ते शोषण का परिणाम है। भारतीय समाज में हमेशा से ही जाति के आधार पर महिलाओं के बीच भेदभाव होता रहा है। जाति आधारित शोषण के कारण दलित महिलाओं के अस्तित्व को हमेशा से नकारा गया है। उन्हें पूंजीवादी समाज द्वारा उपभोग की वस्तु की तरह खरीदा और बेचा जाता रहा है। दलित महिलाएं इंसान होते हुए भी जानवरों की तरह जीने को अभिशप्त हैं। समाज में अज्ञानता के अंधकार के कारण उनका हर रूप में

शोषण होता था। दलित समाज को समाज में अपनी भूमिका स्थापित करने के लिए हर कदम पर संघर्षों का सामना करना पड़ा। समकालीन हिंदी दलित कथा साहित्य पर जब हम नजर डालते हैं तो यह बात साफ तौर पर नजर आती है। दलित साहित्यकारों ने आठवें दशक में ही दलित साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू कर दी थी। अपनी रचनाओं के माध्यम से ये लेखक उस समाज की सच्चाई को लगातार जिक्र करने लगे जो सदियों से दबा रहने के लिए अभिशप्त था। चयनित 'दलित' कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक परिप्रेक्ष्य में बदलते हुए जीवन संदर्भ में दलित स्त्री किस प्रकार की चुनौती सामना कर रहा है। इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

वर्तमान परिदृश्य में संवैधानिक अधिकारों और जागरूकता अभियानों के कारण भारतीय सामाजिक संरचना में काफी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। लेकिन समाज में अभी भी स्त्री-पुरुष, दलित और गैर-दलित, अमीर और गरीब, ग्रामीण और शहरी, काले और गोरे के बीच गहरी खाई है। दलित महिलाओं की हालत बद से बदतर है। हालाँकि, दलितों और महिलाओं की स्थिति में सुधारात्मक बदलाव देखे जा रहे हैं। लेकिन जाति, अपमान, तिरस्कार, शोषण और उत्पीड़न की मजबूत दीवार को पूरी तरह से तोड़ने में समय लगेगा, लेकिन अच्छी खबर यह है कि अब दलित लेखकों और महिला लेखकों द्वारा दलित महिला जीवन की भयावह त्रासदी को समाज के सामने लाने और उससे बचाने के लिए एक संयुक्त प्रयास किया जा रहा है। लेकिन दलित महिलाएं अभी भी पूर्ण रूप से पुरुषों की तरह जागरूक और मजबूत नहीं हो पाई हैं। भारत की वर्तमान सामाजिक संरचना में इन दलित महिलाओं की दयनीय स्थिति और उससे मुक्ति के उनके प्रयासों का विश्लेषण करने और लोगों को समझाने के लिए मैंने 'आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष सन्दर्भ में) विषय पर शोध करना उचित समझा।

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध-प्रबंध को कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है-

प्रथम अध्याय- 'दलित स्त्री चेतना एक अध्ययन' में 'चेतना' शब्द, अर्थ, परिभाषा, दलित का परिचय, दलित स्त्री की अवधारणा, दलित साहित्य, भारतीय दलित साहित्य, कथा - साहित्य के विभिन्न परिदृश्य- पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय- 'हिन्दी की प्रमुख दलित कहानियाँ एवं स्त्री पात्र' शीर्षक के अंतर्गत आधुनिक दलित कहानियाँ एवं स्त्री पात्रों का विश्लेषण तक का अध्ययन किया है। दलित स्त्री पात्रों पर संघर्ष, पीडित दलित स्त्री, प्रतिरोध के आवास बनी दलित स्त्री, निडर दलित स्त्री का विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय - 'दलित स्त्री कहानियों में अस्मिता बोध एवं जीवन संघर्ष - चुनी हुई कहानियों के सन्दर्भ में' इसमें दलित स्त्री अस्मिता, जीवन संघर्ष की सामाजित, आर्थिक, सांस्कृतिक- धार्मिक परिप्रेक्ष्य का विस्तृत अवलोकन किया गया है। साथ ही चेतनापरक आन्दोलनों से प्रेरित दलित स्त्रियों द्वारा अपनी अस्मिता को वजूद में रखने के संघर्षपरक प्रयास का सूक्ष्म परक अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - 'दलित स्त्री चेतना एवं प्रतिरोध चुनी हुई कहानियों के सन्दर्भ में। प्रस्तुत अध्याय में प्रतिरोध का ऐतिहासिक परिदृश्य, दलित स्त्री एवं प्रतिरोध का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें दलित महिलाओं के प्रतिरोध के विभिन्न रूप अंकित किया गया है।

पंचम अध्याय - 'आधुनिक दलित कहानियों का शिल्प एवं भाषा वैशिष्ट्य' में चुनी हुई दलित कहानियों को शिल्पगत वैशिष्ट्य एवं भाषा वैशिष्ट्य के आधार पर विभाजित किया गया है। शिल्प, शिल्प का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, शिल्पगत वैशिष्ट्य के अंतर विषयवस्तु,

कथानक, चरित्र चित्रण, देशकाल तथा वातावरण, शीर्षक का प्रयोजन, भाषा शैली को अनुच्छेदों में विवेचित किया गया है। भाषा शैली में वर्णनात्मक शैली, आत्मकथा शैली, स्वप्न शैली, संवाद शैली, चित्रात्मक शैली, नाटकीय शैली, फैटैसी आदी शैली का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक दलित कहानियों की भाषा वैशिष्ट्य में शब्द चयन के अंतर तत्सम तत्भव, देशज शब्द, अंग्रेज़ी, अरबी फारसी को सम्मिलित किया गया है।

अध्यायों के बाद 'उपसंहार' शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन-विश्लेषण के सार संक्षेप के साथ-साथ अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। उसके बाद 'संदर्भ ग्रंथ सूची' में अध्ययन के लिए प्रयुक्त आधार ग्रंथों एव सहायक ग्रंथों का परिचय दिया गया है। अध्ययन के लिए उपयोगी पत्रिकाओं और वेबसाइट की सूची भी तदनन्तर समाहित की गयी है। अंत में परिशिश्ट के अंतर्गत अपने प्रकाशित शोध आलेख और 'प्लाजारिसम रिपोर्ट' संल्ग्न है।

इस शोध प्रबंद को अपनी क्षमता के अनुसार त्रुटिहीन बनाने का भरसक प्रयास मैंने किया है। फिर भी यदि कोई त्रुटि या कमी शेष रही है तो उसके लिए मैं क्षमापार्थी हूँ।